सुनील त्रिपाठी

उत्तर प्रदेश

जब किनारा आपने

कर लिया आँखें चुराकर, जब किनारा आपने।
भाव कोमल दृष्टि में, भर क्यों निहारा आपने।

दीप अपने प्रेम का, बुझ जाय कब था ये गंवारा।
आंधियों पर किन्तु मढ़ दें, किस तरह से दोष सारा
आपकी सूरत सलोनी, के अलावा है मिला क्या,
आइने-सा तोड़कर दिल, आपने देखा हमारा

की न कोशिश जोड़ने की, फिर दुबारा आपने।
भाव कोमल दृष्टि में, भर क्यों निहारा आपने।

कामना थी प्रियतमें बस, आपसे केवल प्रणय की
आपको थी आस हमसे, याचना की या विनय की
प्राण भी यदि मांग लेते, हम लुटा देते विहँस कर
हठ नहीं थी यह कहीं से, भी पराजय या विजय की

कर दिया होता ज़रा सा, बस इशारा आपने।
भाव कोमल दृष्टि में, भर क्यों निहारा आपने।

पत्रिका यदि बांच लेते, खोल कर उर की पिटारी।
क्यों भला अनउत्तरित, प्रश्नावली रहती हमारी।
जान लेते भोर कैसे और कैसे सांझ बीती,
आपके बिन रात विरहन, किस तरह हमने गुजारी।

फेर लीं नजरें न कुछ, सोंचा विचारा आपने।
भाव कोमल दृष्टि में, भर क्यों निहारा आपने।

स्वप्न हमारे आगे आगे

हम स्वप्नों के पीछे-पीछे, स्वप्न हमारे आगे आगे।
भरी नींद हम प्यार ढूंढते रहे, रात भर जागे जागे।

चूम चूम कर हवा लगाती, रही गले बादल को कस कर।
दूर हो गयी पल में वह भी, आँचल कभी छुड़ाकर हँस कर।
त्रिया चरित्र हवाओं का कब, समझ सकेंगे मेघ अभागे
भरी नींद हम प्यार ढूंढते रहे————————

चुन चुन मृदुल भावनाओं को, सम्बन्धों में रहे पिरोते।
होकर दूर, रहे हम प्रतिदिन, पल-पल तुमको पाते खोते।
फूट फूट कर रोए, जिस दिन सम्बन्धों के टूटे धागे
भरी नींद हम प्यार ढूंढते रहे————————

तुम बिन यह एकाकी जीवन, किसी मरुस्थल-सा निर्जन है।
प्यास प्रेम की लिए अधर पर, भटक रहा अति व्याकुल मन है।
गर्म रेत पर तृप्ति हेतु अब, मृग यह भला कहाँ तक भागे
भरी नींद हम प्यार ढूंढते रहे—